

ग्रसाबारन

EXTRAORDINARY

भाग Ш—कच्छ 3—उपलब्ध ()

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राथिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं∘ 261]

नई बिल्ली, सोमवार, ग्रप्नैल 12, 1971/चंत्र 22, 1893

No. 261)

NEW DELHI, MONDAY, APRIL 12, 1971/CHAITRA 22, 1893

इस भाग में भिन्न एटट संक्या दो जाती है जिससे कि यह जलग संकलन के रूप में रक्ता जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND INTERNAL TRADE

(Department of Industrial Development)

ORDER

New Delhi, the 12th April 1971

S.O. 1571.—Whereas the Central Government in the Ministry of Industrial Development, Internal Trade and Company Affairs (Department of Industrial Development) by its notified Order No. S.O. 2202/18A/IDRA/70, dated the 20th June, 1970, issued under Section 18A of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), authorised the Gujarat State Textile Corporation Limited, Ahmedabad to take over the management of the whole of the industrial undertaking called the Rajkot Spg. and Wvg. Mills Ltd., Rajkot (hereinafter in this Order referred to as the 'industrial undertaking') for the period specified thereon;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Sub-section (2) of Section 18E of the said Act, the Central Government hereby specifies in the schedule annexed hereto the exceptions, restrictions and limitations subject to

which the Companies Act, 1966 (1 of 1956), shall continue to apply to the industrial undertaking in the same manner as it applied thereto before the issue of the notified order under Section 18A.

SCHEDULE

Provisions of the Companies Act, 1956

Exceptions, restrictions and limitations subject to which the provisions mentioned in Column (1) shall apply to the undertaking.

Section 293 (1) (d)

This Section shall not apply in respect of any person or body of persons authorised by the Central Government to take over the management of the company under Section 18A of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951.

> [No. F.9(8)/Lic.Pol./68.] K. D. N. SINGH, Jt. Secy.

भौशोगिक विकास धौर पात्तरिक व्यापार संजालय

(श्रीद्योगिक विकास विभाग)

श्रादेश

नई दिल्ली, 12 श्रप्रेल 1971

का॰ मा॰ 1571.—यतः केन्द्रीय सरकार के भौधोगिक विकास, भान्तरिक व्यापार तथा कम्पनी कार्य मंत्रालय ने उद्योग (विकास तथा विनियमन) श्रीधिनियम 1951 (1951 का 65) की धारा 18क के भ्रधीन जारी किए गये अपने अधिसृचित भ्रादेश सं० का०भ्रा० 2202/18ए/भाई० डी०भ्रार०ए० 170 तारीख 20 जून, 1970 द्वारा राजकोट स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड, राजकोट (जिसे इस भ्रादेश में इसके पश्चात श्रीद्योगिक उपक्रम कहा गया है) नामक संपूर्ण भौद्योगिक उपक्रम का प्रवन्ध उसमें विनिर्दिष्ट भ्रवधि के लिए भ्रपने श्रिधिकार में ले लेने के लिए गुजरात स्टेट टेक्स्टाइल कारपोरेशन लिमिटेड अहमदाबाद को श्राधिकृत किया था;

श्रतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 18 इ की उनधारा (2) द्वारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इससे उनाबद्ध श्रत्भूची में उन अपवादों, निर्धन्धनों भौर परिसीमाओं को एतद्बारा विनिर्दिष्ट करती है जिनके श्रधीन रहते हुए कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 का 1) उस श्रीद्योगिक उनक्रम को उसी रीति से लागू बना रहेगा, जिस रीति से वह धारा 18क के श्रधीन श्रधि-सूचित श्रादेश के जारी होने से पहले उसे लाग् होता था।

के० डी० एन० सिंह, संयुक्त स**चिव**।

ग्रनुसू <u>ची</u>				
कम्पनी ग्रधिनियम 1956 के उपद्यन्ध	वे श्रपवाद निर्बन्धन श्रौर परिमीमाएं जिनके श्रधीन रहते हुए स्तंभ (1) में वर्णित उपबन्ध उस उपक्रम को लागू होंगे।			
धारा 293 (1) (घ)	यह धारा किसी ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के निकास की बाबत लागू नहीं होगी जिसे या जिन्हें केन्द्रीय सरकार ने उद्योग (विकास तथा विनियमन) ग्रिधिनियम 1951 की धारा 18क के ग्रधीन उस कम्पनी का प्रबन्ध ग्रपने ग्रिधिकार में ले लेने के लिए प्राधिकृत किया हो।			
,	[सं० फा ०ं 9(8)/लिक ० पोल०/68 .]			